ISSN:2583-3200 Volume: 3, 2023 IF: 4.426 Frequency: Annual

International Journal of Innovations in Liberal Arts

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.7986826

# आधुनिक नाटक और नाट्यशास्त्र

**Ruchi Gupta**
Ph. D Scholar
Amity School of Liberal Arts
Amity University Haryana, India
**&**
**Supriya Sanju**
Amity Centre for Sanskrit and Indic Studies, ASLA
Amity University Haryana, India

**Received: FEB. 15, 2023** **Accepted: APR. 23, 2023** **Published: MAY. 31, 2023**

## परिचय

भरत मुनि को नाट्यशास्त्र का एक महान लेखक माना जाता है, जो नाट्यशास्त्र पर पहला संस्कृत कार्य है। ऐसा माना जाता है कि नाट्य शास्त्र में नाट्य रचना के नियमों का न केवल आकलन किया जाता है, बल्कि कर्ता, रंगमंच और द्रष्टा इन तीनों तत्वों की पूर्ति के साधनों की चर्चा की जाती है। नाटक के चार प्रमुख भाग हैं- वाचिक, सात्विक, अंगिक और आहार। वाणी और प्रतिक्रिया का सटीक अनुकरण मौखिक अभिनय का विषय है। सात्विक अभिनय भावों का वास्तविक प्रदर्शन है। नाटक का मुख्य उद्देश्य भौतिक जीवन के विभिन्न दुखों से पीड़ित लोगों का मनोरंजन करना है- यह देवताओं, राक्षसों और मानव समाज के लिए आनंद का एक सरल साधन है। यह एक मनोरम शोध है जो आंख को प्रसन्न करता है और देखने वाले की भावनाओं को खींचता है- यह जाति, वर्ग, आयु आदि के प्राकृतिक और सामाजिक भेदों से पूरी तरह से स्वतंत्र एक कांट, 'चक्षुस्क्रतु' है।

हर व्यक्ति की अलग रुचि और स्वभाव होता है। और इन्हीं विशिष्ट मानव स्वभाव के आधार पर ही नाटक की रचना भी होती है। इसलिए लोग अपने स्वभाव के अनुसार, अपने शिल्प, वक्र, व्यवसाय, क्रिया और वाणी के अनुसार नाटक में सब कुछ पा सकते हैं। इसमें शारदतनय ने बताया है कि नाटक देखकर किस तरह के लोगों को आनंद मिल सकता है। जैसे:- कामी, चतुर, सेठ, वैरागी, वीर, ज्ञानी, मोटे-बूढ़े, स्वाद के ज्ञाता और बच्चे, मूर्ख, और स्त्रियाँ भी- सभी

नाटक का आनंद ले सकते हैं;- क्योंकि नाटक के अनुसार लोग भी आनंद ले सकते हैं। उनके अपने हित। काम की बात से युवा, नीति की बात से चतुर, धन की बात से सेठ, मोक्ष की बात से वैरागी, उग्र, प्रचंड और युद्ध की बात से वीर, युद्ध की इच्छा से वृद्ध सभी धर्म, और विद्वान लोग सभी प्रकार की अच्छी चीजों से बने हैं। और पुरुष और स्त्री विनोदपूर्ण बातें सुनकर और नोटों की वेशभूषा देखकर प्रसन्न हो जाते हैं।

नाटक में तीनों गुणों सत्व , रजस और तमस को देखा जा सकता हैं। इसलिए अलग - अलग रुचि वाले लोगों के लिए नाटक ही एक ऐसा साधन है जिससे सब को एक सा आनंद मिलता है (दशरूपक) ।

## उद्देश्य

- भरतमुनि के नाट्य शास्त्र के महत्व को समझ सके।
- समाज में नाट्यशास्त्र की क्या भूमिका है यह जान सके।
- समाज के रूपों जैसे अच्छाइयां व बुराइयों का नाट्यशास्त्र से क्या संबंध है यह ज्ञान प्राप्त कर सके।
- नाट्यशास्त्र के माध्यमों के विषय में अध्ययन कर सकें।
- नाट्य शास्त्र और आधुनिक नाटकों में कितना अंतर है यह जान सके।

## शोध की आवश्यकता

ढाई हजार वर्ष पूर्व भरत मुनि ने नाट्य शास्त्र की रचना की थी। जिसके माध्यम से उन्होंने समाज को नाटक के नियमों जैसे 'रस' की उपयोगिता से अवगत कराया था। लेकिन आज जब हम नाटक के बारे में अध्ययन या चर्चा करते हैं तो हम पाते हैं कि नाटक का उद्देश्य बदल गया है। आज नाटक केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं है, अपितु अपराध और गलत कार्यों को संगठित करने की अधिक जानकारी भी देता है। इसके साथ ही वह समाज के सामने अभद्रता दिखाने से भी पीछे नहीं हटते। भरत मुनि ने नाटक में जिन दृश्यों और संवादों की मनाही की थी, वह सब आज हम टीवी, चलचित्र, ऑनलाइन श्रृंखला, लोकप्रिय संस्कृति, (टीवी, मूवीस और ऑनलाइन सीरीज) में देखते हैं। ( जैसे चुंबन, कमोड का प्रयोग, थूकना, गालियां इत्यादि)।

आज के बच्चों की भाषा और व्यवहार में परिवर्तन देखा जा सकता है। जिससे उनका मानसिक स्तर भी प्रभावित हो रहा है। उन फिल्मों का बच्चों के साथ-साथ युवाओं पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है।

## शोध विधि

प्रस्तुत शोध की विधि तुलनात्मक है। जिसके अंतर्गत वर्तमान परिपेक्ष में नाट्यशास्त्र के व्यवहारिक संदर्भ के स्वरूप से संबंधित तथ्यों का संग्रह किया गया है एवं वर्तमान परिपेक्ष में नाट्य शास्त्र की क्या भूमिका है। इस संदर्भ में भी शोध किया है इसके बाद परिकल्पना के आधार पर इसका विश्लेषण करके शोध का निष्कर्ष प्राप्त किया गया है।

इनके चरणों का उल्लेख यहां किया गया है:-

1) तथ्यों का संकलन
2) तथ्यों का विश्लेषण
3) प्रकल्पना की जांच
4) सामान्यीकरण एवं व्याख्या
5) शोध प्रतिवेदन तैयार करना

## आधुनिक नाटक और नाट्यशास्त्र

भरत मुनि का नाट्य शास्त्र अपने आप में नाटक का एक पूर्ण रूप से संगठित और व्यापक ग्रंथ है, जिसमें प्रत्येक भाग को विस्तार से समझाया गया है। आज नाट्य शास्त्र की आवश्यकता ज्यादा महसूस होती है , क्योंकि जो लोग संस्कृत से नहीं जुड़े हुए है। और जो अन्य विभागों के छात्र व् अध्यापक है। और जो समाज के अन्य लोग है वे भी ये जाने की नाट्य शास्त्र की महत्ता आज के समय में भी है। जो लोग रंगमंच से जुड़े है और जो अन्य स्थानों पर नाटक करते है उन्हें भी इस शास्त्र के महत्व को जानना चाहिए। आधुनिक रंगमंच के लिए भी नाट्य शास्त्र को जानना व समझना अति आवश्यक है। भारतीय रंगमंच का विषय आज के समय में बदला हुआ दिखाई देता है। यहाँ एक विश्वकोशात्मक शास्त्र है जो रंगमंच व आधुनिक नाटकों के लिए आवश्यक है।

आधुनिकता के इस दौर में नाट्यशास्त्र की जीवंत परम्परा की कड़ियों को टूटा हुआ देखा जा सकता है। जिसे समझे वाले लोग बहुत कम मिलते है। आज हमारे समाज में पश्चिम के रंगमंच को अपनाया जा रहे है, जो आधुनिक नाटकों, टी. वी. शो , मूवीस, आदि में साफ देखा जा सकता है। समाज को पश्चिम के रंगमंच व यथार्थ वादी रंगमंच को अपनाना चाहिए परन्तु फिर भी समाज को नाट्य शास्त्र की आवश्यकता रहेगी। क्योंकि जब यह प्रश्न आता है की हमारा अपना रंगमंच क्या है ? तब यह जानना जरूरी हो जाता है कि क्या है नाट्य शास्त्र, और क्यों इसकी आवश्यकता आज के समय में ज्यादा हैं। हम कहते है की हमारे पास दाई / तीन साल पुरानी नाटक की परम्परा है। बहुत संपन्न हमारा रंगमंच रहा है, और ऐसा माना जाता है कि भारत ने ही रंगमंच की कला दी है। भारत के बहार तक नाट्य शास्त्र के अंश को

भी देखा जा सकता है। जैसे दक्षिण कुरैशिया के देशों में नाट्य शास्त्र के अनुसार वहां के मंदिरों में कर्ण और रंगहार करण अंकित है। वहां जो रामलीलाये होती है और जो नाटक होते हैं उन पर नाट्यशास्त्र का प्रभाव देखने को मिलता है। इसके अलावा जापान के रंगमंच पर भी हम नाट्यशास्त्र का प्रभाव देख सकते हैं। यह तो कहना गलत नहीं होगा कि दुनिया को हमने रंगमंच दिया है परंतु आज हम अपने ही रंग मंच के लिए इसका प्रयोग नहीं करते हैं।

लेकिन भारत में आज भी कहीं-कहीं इसके अंश देखने को मिलते हैं जैसे - कूडियाट्टम (यह मंदिर-कला है जिसे चाक्यार और नंपियार समुदाय के लोग प्रस्तुत करते हैं। साधारणतः कूत्तंपलम नामक मंदिर से जुडे नाट्यगृहों में इस कला का मंचन होता है।) दो हजार सालो से चली आ रही एक ऐसी जीवित परंपरा है जो आज भी रंगमंच के रूप में देखी जा सकती है। इसके अलावा कुचिपुड़ी और कथकली आदि में नाट्य शास्त्र का प्रभाव मिलता है।

परन्तु मध्यकाल के बाद नाट्यशास्त्र का प्रभाव अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता। लोक नाटकों के विकास के साथ-साथ टीवी, सिनेमा, ऑनलाइन सीरीज आदि आधुनिक नाटकों को हम पश्चिम से प्रेरित होकर कर रहे हैं। जिनमें पुरुषार्थ बोध न के बराबर देखने को मिलता है। जिसका प्रभाव समाज व युवाओं पर कुछ अलग सा पड़ रहा है। जिससे आजकल के बच्चों की भाषा के साथ-साथ व्यवहार में भी बदलाव देखा जा सकता है। जिस कारण उनका मानसिक स्तर भी प्रभावित हो रहा है। बच्चों के साथ-साथ युवाओं पर भी आधुनिक नाटक वह मूवीस का गहरा प्रभाव हमें देखने को मिलता है। जैसे:- यदि किसी व्यक्ति को किसी भी प्रकार की परेशानी है तो वह आजकल की मूवीस व टीवी की कहानी से प्रभावित होकर अपनी परेशानी को अपराधिक ढंग से खत्म करने की योजना बनाने लगता है। नाट्य शास्त्र के अनुसार यह सब नाटक में प्रदर्शित करना अनुचित है परंतु इसके बावजूद भी हम अभद्र वह अनुचित दृश्यों को देखते हैं और उनका समर्थन भी करते हैं। जो कि नाट्य शास्त्र के अनुसार सही नहीं है हमें नाटक की मर्यादा को समझना चाहिए व उसी के दायरे में नाटक व मनोरंजन के साधन को प्रस्तुत करना चाहिए।

अतः इन्हीं सब परिस्थितियों को देखते हुए हमें इस विषय पर शोध करने की आवश्यकता है।

## निष्कर्ष

आजकल 'एक्टिंग ' का अर्थ "अभिनय" होता है, लेकिन 'नाट्यशास्त्र' में अभिनय का अर्थ कुछ अलग है। नाट्यशास्त्र में "अभिनय" शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है। यह केवल एक हिस्सा है, लेकिन नाट्य शास्त्र में, नाटक का तत्व प्रदर्शन का एक हिस्सा था! गायन, वादन, नृत्य, मंच, शिल्प, काव्य, अध्यात्म, दर्शन, योग, मनोविज्ञान, प्रकृति आदि "अभिनय" के दायरे में आते हैं। भरत मुनि का नाट्य शास्त्र अपने आप में नाटक पर एक पूर्ण संगठित और व्यापक ग्रंथ

है। जिसके हर हिस्से पर विस्तार से चर्चा की गई है। यह पुस्तक आज ही नहीं बल्कि हर युग में प्रासंगिक है। विश्व स्तर पर पढ़ाया जाता है, यही निर्धारित करता है। यह एक अनुशासन है जो रंगमंच और अन्य कलाओं का एक प्रमुख स्तंभ है। यह एक ऐसा मार्ग है जो जीवन में नई कल्पनाओं को जन्म देगा।

जब मंच पर समाज की दशा सजीव होती है तो दर्शक आसानी से उससे जुड़ जाते हैं। रंगमंच सही और गलत के बीच के अंतर को बारीकी से चित्रित करता है। आम आदमी के साथ खड़े होने से जनता का पक्ष मजबूत होता है। और जनता का विरोध दलों की अमानवीयता को दर्शाता है। रंगमंच सवाल उठाता है और सभी प्रकार की जड़ता और यथास्थिति के खिलाफ विद्रोह में, रंगमंच एक बेहतर समाज की दृष्टि पैदा करता है। रंगमंच न केवल समाज का दर्पण है बल्कि परिवर्तन का वास्तविक साधन भी है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची


पोनंगी श्री राम अप्पाराव (2001)। नाट्य शास्त्र के विशेष पहलू । राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय।

नाट्यशास्त्र भरत मुनि द्वारा रचित,

विश्वनाथ भट्टाचार्य; रामरंजन मुखर्जी (1994)। संस्कृत नाटक और नाट्यशास्त्र । शारदा। आईएसबीएन 978-81-85616-30-8.

साहित्यदर्पण 1:179

नाट्यशास्त्र 6।61, भरतमुनि

साहित्य दर्पण: 3।222,विश्वनाथ

https://www.youtube.com/watch?v=0FijKmakRIE

जीके भट (1981)। नाय्य-मंजरी-सौरभ: संस्कृत नाटकीय सिद्धांत (अंग्रेजी और संस्कृत में)। भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट। ओसीएलसी 11717230 ।

वालेस डेस (1963)। "संस्कृत नाटकीय सिद्धांत में" रस "की अवधारणा"। शैक्षिक रंगमंच जर्नल । **१५** (३): २४९-२५४। डोई : 10.2307/3204783 । जेएसटीओआर 3204783।

दलाल, रोशन (2014)। हिंदू धर्म: एक वर्णमाला गाइड । पेंगुइन किताबें। आईएसबीएन 978-81-8475-277-9.